Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:22 Issue:2 May 2020

शैक्षिक नीतियों काझारखण्ड में स्कूली शिक्षापर प्रभावका अध्ययन

JANE ALICE MINZ

RESEARCH SCHOLAR, KALINGA UNIVERSITY RAIPUR,CHHATTISGARH

DR.USHA BAXI

PROFESSOR, KALINGA UNIVERSITY RAIPUR,CHHATTISGARH

सारांश

शैक्षिक विकास की दृष्टि से झारखण्ड राज्य निरन्तर प्रगति कर रहा है। 2001 की जनगणना के आधार पर प्रदेश की कुल जनसंख्या 2,07,95,956 है। यहाँ की शहरी जनसंख्या, कुल जनसंख्या का 20.08 प्रतिशत तथा ग्रामीण जनसंख्या 79.92 प्रतिशत है। झारखण्ड राज्य में जनसंख्या का औसत घनत्व 154 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर है। झारखण्ड राज्य की साक्षरता दर 65.18 प्रतिशत है। 1991 की जनगणना में साक्षरता दर 42 प्रतिशत के लगभग थी। राज्य शिक्षा की दृष्टि से कैसे बड़े–बड़े डग भर रहा है यह इसी से पता चलता है। परन्तु महिला और पुरुष साक्षरता दर में अंतर अभी भी 25 प्रतिशत के लगभग है। इस पर हमें कार्य करना होगा। राज्य में बहुभाषा–भाषी हर क्षेत्र में पाये जाते हैं। वनांचलों मे रहने वाले समुदाय की भाषा गोंड़ी, हल्बी, सादरी, कुडूक, इत्यादि है। मैदानी भागों में झारखण्ड बोलने वालों की बहुलता है। प्रदेश में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण हेतु स्कूल शिक्षा विभाग के वार्षिक प्रतिवेदन 2007 के अनुसार राज्य में 35,320 प्राथमिक शालाएँ तथा 14,285 मिडिल स्कूल संचालित हैं। प्राथमिक स्तर पर शालाओं में बालकों की दर्ज संख्या 18,60,957 तथा बालिकाओं की दर्ज संख्या 17,02,909 है। मिडिल स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की दर्ज संख्या क्रमशः 7,04,998 एवं 5,69,195 है।

मुख्यशब्द शैक्षिक नीति, झारखण्ड, स्कूली शिक्षा, शैक्षिक विकास

प्रस्तावना

सांस्कृतिक परिदृश्य प्रदेश में विभिन्न जाति, धर्म के विविध भाषा–भाषी लोग रहते हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की जनजातियाँ निवास करती हैं, इनमें गोंड़, कमार, भतरा, हल्बा, उराँव, बिंझवार, झरिया, साँवरा, बैगा,

पहाड़ी कोरवा, पंडो, कँवर, माड़िया, मुड़िया आदि जनजातियाँ प्रमुख हैं। यहाँ की संस्कृति विविधतापूर्ण है। लोक कलाओं, कथाओं, लोक साहित्य व लोक गीतों में इसे देखा जा सकता है। ग्रामीण संस्कृति में परम्परागत् मान्यतायें व रीति–रिवाजों का विशेष महत्व है। तीज, पोला, हरेली, छेरछेरा, दशहरा, दीवाली और होली इत्यादि त्यौहार कहीं न कहीं लोक संस्कृति से जुड़े हैं। सरगुजा का त्यौहार, बस्तर का दशहरा, बिलासपुर का राउत नाचा, ददरिया व गेड़ी नृत्य के साथ समस्त झारखण्ड प्रचलित सुआ नृत्य, पंथी नृत्य और पंडवानी, भरथरी गायन इस अंचल की सांस्कृतिक समृद्धि के परिचायक हैं। यहाँ धातुकला, मूर्तिकला, काष्ठ व मिट्टी से कलात्मक वस्तुओं का निर्माण इत्यादि विशेष लोकप्रिय कलाएँ हैं। जिनके संरक्षण की आवश्यकता है।

शैक्षिक परिदृश्य

प्रारंभिक शिक्षा के लोक–व्यापीकरण का कार्य सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत राजीव गांधी शिक्षा मिशन को सौंपा गया है। जिसके तहत् 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों की प्रारंभिक स्तर की शिक्षा पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। प्रारंभिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति, जनजाति वर्ग की बालिकाओं को निःशुल्क गणवेश प्रदान किये गये। जहाँ पर कोई स्कूल नहीं है, ऐसे ग्रामों में ज्ञान–ज्योति स्कूल खोले गये हैं। बच्चों को वैकल्पिक शिक्षा के अंतर्गत शिक्षण सुविधाएँ उपलब्ध करायी गयी हैं। कक्षा 1 से 8 तक के सभी बालक एवं बालिकाओं को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करायी गयी हैं। इससे शासकीय एवं अनुदानप्राप्त विद्यालयों में अध्ययनरत बालक/बालिकाएं लाभान्वित हुए हैं। इसके बावजूद 2006–07 में 6 –14 आयु समूह के लगभग 1,23,000 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे थे। यह चिंता का विषय है। विद्यालयों में अध्ययनरत बालक/बालिकाएं लाभान्वित हुए हैं। इसके बावजूद 2006–07 में 6 –14 आयु समूह के लगभग 1,23,000 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे थे। यह चिंता का विषय है।

शिक्षा की चुनौतियाँ व प्रयास

क) राज्य के बालक तथा बालिकाएँ जो शिक्षा सुविधाओं से वंचित हैं, सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत विभिन्न योजनाओं के माध्यम से उन्हें शिक्षा सुविधाएँ उपलब्ध करायी जा रही हैं। जनजागरण, प्रवेशोत्सव इत्यादि के माध्यम से शत–प्रतिशत् नामांकन का लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास जारी है।

ख) वनांचलों में रहने वाले विविध भाषा–भाषी व सांस्कृतिक विविधता वाले शिक्षार्थियों के मध्य सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का संचालन एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। दुर्गम क्षेत्रों में अपर्याप्त आवागमन व संचार के साधन विद्यालय को भौतिक दृष्टि से सुदृढ बनाने में मुख्य रूप से बाधक हैं। इसी लिए शाला त्यागी बच्चों की संख्या अभी भी अधिक है। वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2006–07 के अनुसार प्राथमिक शाला में औसत त्याग दर लगभग 21 प्रतिशत है। इसी प्रकार कक्षा 6 से 8 में औसत त्याग दर लगभग 14 प्रतिशत है। अतः शालात्याग दर में कमी लाना, शाला त्यागी बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में पुनः लाना, सभी बच्चों की शाला में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

ग) प्रदेश में कुछ ऐसी जातियाँ भी निवास करती हैं जिनका जीवन पूर्णतः अस्थायी होता है ऐसे घुमन्तू समूह के बच्चों की शिक्षा–व्यवस्था कैसे की जाए, यह राज्य के लिए एक मुख्य समस्या है। राज्य के कुछ जिलों के निवासी प्रतिवर्ष एक मौसम विशेष में पड़ोसी राज्यों में रोजी–रोटी के लिए प्रवास करते हैं, उनके बच्चे शिक्षा जारी रखने में असमर्थ होते हैं। वनों पर आधारित जीवन व्यतीत करने वाली जातियों के बच्चों की शिक्षा व्यवस्था भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

घ) निःशक्तजनों तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था के लिए भी राज्य में सार्थक प्रयासों की आवश्यकता है। राज्य में प्रारंभिक शिक्षा को बढ़बो स्कूल जाबो, स्कूल जाबो आबो, स्कूल जाबो जिंदगी बर, सुघ्घर शिक्षा सबो बर के नाम से दर–वर्ष योजना चलायी गयी है। झारखण्ड सूचना शक्ति योजना अनुसूचित जाति और गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन करने वाली कक्षा 9 से 12 की बालिकाओं हेतु चलायी जा रही है। राज्य में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा हेतु विशेष भर्ती अभियान चलाकर उन्हें विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। शाला अप्रवेशी व शाला त्यागी बच्चों की समस्याओं के निदान के लिए रोचक व जीवनोपयोगी तथा ब्रिज कोर्स के रूप में सामग्री तैयार की गयी है।

राज्य की पाठ्यचर्या विकसित करने के मार्गदर्शक सिद्धांत

पिछले कुछ वर्षों में राज्य में प्रारंभिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार अत्यंत तेजी से हुआ है। शिक्षा की महत्ता को पहचाना गया है और जीवन कौशल के रूप में इसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक माना गया है। विद्यालयों में शिक्षा एक आनंदपूर्ण अनुभव होगा यदि, हम अध्यापन में बच्चों के रचनात्मक स्वभाव का

सदुपयोग करें। वर्तमान स्कूली पाठ्यचर्या और परीक्षा–व्यवस्था बच्चों को बहुत सी जानकारी रटने और उगलने को विवश करती हैं। इनमें परिवर्तन करने के लिए निम्न मार्गदर्शक सिद्धांत आवश्यक हैं–

☐ ज्ञान को स्कूल के बाहर जीवन से जोड़ना ताकि सीखा गया ज्ञान स्थायी हो तथा उसका उपयोग दैनिक जीवन में किया जा सके। कक्षा के ज्ञान को बच्चों के जीवन–अनुभव से जोड़ा जाए ताकि समाज के ऐसे बच्चे जिन्हें काम से जुड़े कौशल का ज्ञान हो उसे लेकर अपने को गौरवान्वित महसूस कर सकें।

☐ पाठ्यचर्या का विकास इस तरह से हो कि वह बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर उपलब्ध कराये केवल पाठ्यपुस्तक केंद्रित न हो।

☐ परीक्षा को लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना।

☐ प्रजातांत्रिक व्यवस्था के साथ–साथ बच्चों को राष्ट्रीय चिंताओं के प्रति सजग बनाना। सभी बच्चों को स्कूल से जोड़ना।

☐ उनमें उनकी गरिमा और महत्व का एहसास कराते हुए सीखने के लिए विश्वास जगाना।

☐ बच्चों में आत्मसम्मान व नैतिकता के विकास के साथ ही उनकी रचनात्मकता का पोषण करना। बच्चों की जन्मजात् बुद्धि और कल्पना का आदर करना ।

☐ पर्यावरण का संरक्षण एवं पोषण आज के समाज की महती आवश्यकता है क्योंकि आधुनिक तकनीक युक्त जीवन शैली से पर्यावरण असंतुलन में काफी वृद्धि हुई है। अतः पर्यावरण को शिक्षा के सभी स्तरों पर समाहित कर पर्यावरण संबंधी जागरूकता उत्पन्न करना।

☐ शिक्षा सार्थक तभी हो सकती है, जब वह बच्चों को इतना समर्थ बनाये कि वह शांति को जीवन शैली के रूप में चुन सके और संघर्ष को सुलझाने की क्षमता रखे, न कि संघर्ष का निष्क्रिय दर्शक बने अथवा हिंसा पर उतारू हो जाए।

☐ सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रीय अस्मिता को सुदृ करने के लिए भावी पी को इतना सक्षम बनाना कि वह नयी प्राथमिकताओं व बदलते सामाजिक संदर्भ के अनुरूप अतीत का पुनर्मूल्यांकन व पुनर्व्याख्या कर पाये और वह सांस्कृतिक विविधता के प्रति प्रतिबद्ध हो।

☐ शिक्षा से बच्चों में आत्म–विश्वास का संचार करना ताकि वे अपने जीवन के निर्माता बनें। उनमें सतत् शिक्षा की जागृति, सामर्थ्य तथा ललक उत्पन्न हो। आज विश्व में तीव्र गति से आने वाले बदलाव से वह घबराये नहीं वरन् उसका आकलन कर उसे स्वीकार करें अथवा अस्वीकार करें।

☐ शिक्षा शरीर, मन मस्तिष्क और जीवन के विकास पर ज़ोर देती है। बच्चों को शारीरिक रूप से चुस्त बनाना, उन्हें मानसिक और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना । भोजन के चुनाव के बारे में भी बच्चों को सजग करना ताकि वे संतुलित एवं उत्तम भोजन ग्रहण करें। भूख के अनुसार खाएँ। इसके अतिरिक्त उनमें स्वास्थ्य सम्बंधी आदतों का विकास करना, स्वास्थ्यवर्धक उत्तम भोजन के चुनाव करने के बारे में भी बच्चों को सजग करना होगा।

☐ गुणवत्तामूलक समाज के विभिन्न वर्गों के सभी बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध सीखने के अवसर की समानता हो, यह शिक्षकों के लिए एक बड़ी चुनौती है जिसे उन्हें स्वीकार करना होगा।

मानवीय मूल्यों के विकास के लिए शिक्षा

शिक्षा शिक्षार्थी में मानवीय मूल्यों के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षार्थी में देशप्रेम, बड़ों के प्रति सम्मान, मित्रतापूर्ण व्यवहार, सहयोग की भावना, आत्म–अनुशासन, साहस आदि के साथ नियमितता, समय की पाबंदी, उत्तरदायित्व की भावना, परिश्रमशीलता, उद्यमशीलता, सृजनात्मकता की क्षमता का विकास करना होगा। उनमें पर्यावरण के प्रति संचेतना, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता एवं सम्मान की भावना विकसित करनी होगी। अतः इस उद्देश्य को भी शिक्षा के सरोकार के रूप में स्वीकारना होगा।

शिक्षा में गुणवत्ता

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी में अंतर्निहित सर्वोत्तम अंश बाहर निकालने और उच्च सामाजिक योगदान के लिए उसे परिष्कृत करना है। वास्तविक विकास तभी हो सकता है, जब स्वतंत्र और स्वाभाविक रूप से के अवसर मिलें। ऐसी शिक्षा छत्तीसग राज्य के शिक्षार्थियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के छात्रों के समकक्ष लाने में सक्षम होगी। अतः संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया में गुणवत्ता विकास के लिए प्रयास करना ही पाठ्यचर्या का मुख्य सरोकार है।

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:22 Issue:2 May 2020

उच्च प्राथमिक स्तर (किशोरावस्था)

उच्च प्राथमिक स्तर पर होने वाले शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन शरीर एवं मन दोनों को ही प्रभावित करते हैं। अतः यह अवस्था संक्रमण अवस्था कहलाती है। इस अवस्था में बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है। मानसिक स्तर पर वह किसी विशिष्ट समस्या से छुटकारा पाने के लिए सभी काल्पनिक परिस्थितियों के संबंध में तार्किक रूप से सोचने लगता है। बालक अपनी पहचान बनाने का प्रयास करने लगता है। इस प्रक्रिया में वह अपने विचारों के साथ–साथ दूसरों के विचारों तथा सामाजिक दृष्टिकोण को भी समझने लगता है। आपसी सहयोग की भावना है। बालक की रुचि में बार–बार परिवर्तन होता है तथा कभी–कभी वह उनमें विरोधाभास का अनुभव भी करने लगता है। किशोरावस्था अस्मिता के विकास के लिए महत्वपूर्ण अवस्था है। तीव्र शारीरिक बदलावों का प्रभाव उनके सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर पड़ता है। अधिकतर किशोर इन परिवर्तनों का सामना बिना पूर्ण ज्ञान एवं समझ के करते हैं जो उन्हें खतरनाक स्थितियों जैसे यौन रोगों, यौन दुर्व्यवहार, एड्स, एवं नशीली दवाओं के सेवन का शिकार बना सकती हैं।

माध्यमिक शिक्षा

जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कहा गया है माध्यमिक स्कूल बच्चों की शारीरिक बदलावों और अस्तित्व विकास का समय होता है। इस अवधि में अमूर्त का उपयोग करके तर्क करने की क्षमता विकसित हो जाती है। जिससे बच्चों में वर्तमान और मौजूद चीजों से आगे ब के साथ जुड़ने की क्षमता आ जाती है, जो सामने नही होती। इस जुड़ाव में ज्ञान–सृजन की क्षमता भी शामिल है। इस स्तर पर बच्चों को विभिन्न विषयों के महत्व और उनके अध्ययन के प्रति जागरूक बनाना चाहिए जिससे वे विभिन्न विषयों में अपने लिए संभावनाओं और अवसरों को ढूँढ सकें। इस समय बच्चों को निर्देशन और परामर्श की आवश्यकता होती है, जो शिक्षकों अभिभावकों और व्यावसायिक परामर्श दाताओं की मदद से पूरी की जा सकती है। इस स्तर पर बच्चों को सृजनात्मक कार्य–कौशलों को सीखने के अवसर देने होगें। व्यावसायिक विकल्पों और स्थानीय समुदाय के उत्पादक कार्य–संसार से बच्चों को जोड़ना होगा।

Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:22 Issue:2 May 2020

उच्च माध्यमिक स्तर

उच्च माध्यमिक स्तर– इस स्तर पर बच्चे अपनी रूचि समझ और भविष्य को ध्यान मे रख कर व विषयों का चुनाव करते है। अकादमिक व व्यावसायिक विषयों के विभिन्न विकल्प उनके सामने खुलें हों। सीखने के महत्वपूर्ण पहलुओं का भी ध्यान रखना आवश्यक है। प्रयोग करना, भ्रमण, सन्दर्भ सामग्री परियोजनाएँ बनाना, प्रस्तुतियाँ करना सीखने के महत्वपूर्ण पहलू है। स्कूलो मे साधन संपन्न प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय और कम्प्यूटर की उपलब्धि भी बहुत जरूरी है। इस स्तर पर बच्चों को प्रशिक्षित व्यावसायिकों द्वारा मार्गदर्शन और परामर्श भी उपलब्ध होना चाहिए।

शिक्षक–शिक्षा

शिक्षा स्कूली शिक्षा व्यवस्था की माँगों के प्रति अधिक संवेदनशील होनी चाहिए। शिक्षक–शिक्षा शिक्षकों को इस तरह तैयार करे कि वह निम्न भूमिकाओं का निर्वाह कर सके–

☐ शिक्क उत्साहवर्धक, सहयोगी, मानवीय गुणों से परिपूर्ण हो जिससे वह विद्यार्थी में सम्पूर्ण संभावनाओं का विकास कर उसे सक्षम नागरिक बना सकें।

☐ सीखना किस प्रकार हो, इसकी समझ शिक्षक में हो और वह उसके अनुकूल माहौल बनाये।

☐ शिक्षक भाषा की गहरी समझ व दक्षता हासिल करे।

☐ शिक्षक कक्षा में शिक्षकीय दक्षताओं के उन्मुखीकरण का प्रयास करें।

☐ शिक्षक में परामर्श–कौशल और क्षमताओं का विकास हो ताकि बच्चों के शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं का समाधान हेतु उन्हें प्रेरित करने में शिक्षक को सुविधा हो।

☐ उत्पादक कार्य के महत्व को समझे तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यवहारिक अनुभव देने के लिए उन कार्यों को शिक्षण का माध्यम बनाए।

☐ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सके।

☐ शिक्षक की भूमिका में एक बड़ा परिवर्तन आया है, उसे अब तक ज्ञान के स्रोत के रूप में केन्द्रीय स्थान मिलता रहा है। लेकिन अब उसकी भूमिका एक सहायक की होगी जो सूचना को ज्ञान/बोध में बदलने की प्रक्रिया में विभिन्न उपायों से विद्यार्थियों को सीखने में मदद कर सके।

☐ विद्यार्थी के सीखने की प्रक्रिया पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। स्कूल और कक्षा का वातावरण भी सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। अतः विद्यार्थी के मनोविज्ञान के साथ–साथ उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक संदर्भों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षक–प्रशिक्षण

परिवर्तन की प्रक्रिया में शिक्षक एक प्रभावशाली घटक है। शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम में परिवर्तन होते रहते हैं। इसलिए शिक्षकों का उपयुक्त एवं पर्याप्त प्रशिक्षण ज़रूरी है। जो पूर्वकालीन एवं सेवाकालीन दोनों ही तरह के हो सकते हैं। सेवाकालीन प्रशिक्षण को पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया का आंतरिक अंग बनाकर शिक्षण प्रविधि और मूल्यांकन प्रक्रिया से सम्बद्ध किया जा सकता है। शिक्षा का स्तर सबसे अधिक शिक्षकों की गुणवत्ता, प्रतिबद्धता और योग्यता पर निर्भर होता है। अतः शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सुधार आवश्यक होगा। यह प्रशिक्षण स्कूल में सार्थक बदलाव एवं नवाचार का उत्प्रेरक हो।

निष्कर्ष

शिक्षा को प्रासंगिक और सार्थक बनाने के लिए बच्चों की पृष्ठभूमि के वैविध्य अत्यंत महत्व रखते हैं। विद्यालय के बच्चे झारखण्ड की विविधता, जनजातीय बहुलता, सांस्कृतिक विभिन्नता एवं आर्थिक असमानता के परिवेश से आते हैं। इस परिवेश के प्रभाव एवं क्षेत्रीय विभिन्नताओं को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यक्रम का संयोजन किया जाना है। ये प्रभाव संज्ञानात्मक योग्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। अतः छात्रों में सामाजिक अंतः क्रिया को प्रोत्साहित करना जरूरी है। राष्ट्रीय लक्ष्यों तथा सामाजिक–सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को बच्चों के गुणात्मक विकास के लिए आधार बनाया जा सकता है। शिक्षा–व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम शिक्षा–व्यवस्था में ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करें कि विद्यालय का ज्ञान परिवेश में जा कर हुनर/कौशल का रूप ले ले। स्कूली ज्ञान और काम के बीच एक रिश्ता कायम हो। इसके लिए प्राथमिक स्तर पर ही बच्चों को उकसाना होगा कि वे अपना लक्ष्य निर्धारित करें। बच्चों को भविष्य के लिए सपने बुनना और उन्हें साकार करने हेतु, कुछ बनने हेतु प्रेरित करना होगा। महात्मा गांधी

का शैक्षिक दर्शन, शिक्षा प्रणाली में कठिन परिश्रम और काम के साथ सीखने की संस्कृति का विकास करना पाठ्यचर्या का प्रमुख सरोकार है। इससे ज्ञानार्जन और उत्पादन साथ–साथ जुड़ेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2003), राष्ट्रीय शिक्षा नीति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

2. अग्रवाल, जे. सी. और गुप्ता, एस. (2007), सैकण्डरी एजुकेशन, हिस्ट्री प्रोब्लम एण्ड मैनेजमेन्ट, शिप्रा पब्लिकेशन, दिल्ली।

3. आचार्य, एस. (1980), एजुकेशन इन बंगाल (1813–59) ए हिस्टॉरिकल स्टडी एण्ड एनालिसिस, पीएच.डी. (हिस्ट्री), वुर्ड. यूनि. 93।

4. अल्टरनेटिव इकॉनोमिक सर्वे इण्डिया (2007–08), डिक्लाइन ऑफ द डेवलपमेन्टल स्टेट, दानिश बुक्स, देहली।

5. आर्मस्ट्रांग, जी. डेविड एण्ड स्वेज, वी.टॉम (1990), सैकण्डरी एजुकेशन एन इन्ट्रोडक्शन, मैकमिलन पब्लिशिंग कम्पनी, न्यूयार्क।

6. अबू–दूहौ, आई. (1999), स्कूल–बेस्ट मैनेजमेन्ट, यूनेस्को, आई.आई.ई.पी., पेरिस।

7. अग्रवाल, यश (1994), अनुसूचित जातियों में साक्षरता की प्रवृत्तियाँ, परिप्रेक्ष्य–शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ, वर्ष–1, अंक–2।

8. अहमद, मंजूर और गैब्रियल कैरों (1994), सभी के लिए बुनियादी शिक्षा की चुनौति, परिप्रेक्ष्य–शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ, वर्ष–1, अंक–2, नीपा, नई दिल्ली।

9. ऐकरा, जैकब (1996), शैक्षिक अवसरों की असमानता, भारत में अनुसूचित जातियों का दृष्टांत, परिप्रेक्ष्य–शैक्षिक योजना और प्रशासन का सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ, वर्ष–3, अंक–2, नीपा, नई दिल्ली।

10. एजुयबियस, पूनम (1989), ग्रोथ ऑफ हायर एजुकेशन एमंग वुमेन इन उत्तर प्रदेश, पीएच.डी. (हिस्ट्री) यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद।

11. अरोड़ा, रंजना एवं बेहेरा अमरेन्द्र (2009), ग्रामीण भारत में विद्यालयी शिक्षा से जुड़े मुद्दे, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, वर्ष 30, अंक 4

12. अय्यर, आर.वी. (2005), जनरल ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ एजूकेशनल प्लांनिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, वाल्यूम ग्प्ए छवण 1ए नई दिल्ली, इण्डिया।

13. बंसल, रधुवीर शरण (1960), भारत की राजधानी दिल्ली का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय, बंसल एण्ड कम्पनी साहित्य संस्थान, दिल्ली।

14. बेस्ट, जॉन (1977), रिसर्च इन एजुकेशन, प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देहली।

15. भार्गव, लक्ष्मी (2007), भारतीय शिक्षा व्यवस्था एक परिदृश्य, विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी।

16. भार्गव, उर्मिला और भार्गव, ऊषा (2007), शिक्षा सिद्धान्त एवं शिक्षण कला, अमित प्रकाशन, आगरा।

17. बोस, आशीष (1998), डेमोग्राफिक डाइवर्सिटी ऑफ इंडिया, 1991 सेन्सेस स्टेट एण्ड

*****